eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 08, August 2024

रॉबर्ट नोज़िक का न्याय सिद्धांत, व्यक्तिवाद और स्वतंत्रता

डा0 अरविन्द कुमार शुक्ल[1]
[1]सहायक प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिंदकी, फतेहपुर उ0प्र0, भारत

Received: 15 August 2024 Accepted & Reviewed: 25 August 2024 Published: 31 August 2024

Abstract

रॉबर्ट नोज़िक (1938–2002) 20वीं सदी के प्रमुख राजनीतिक दार्शनिकों में से एक थे। उन्होंने अपनी पुस्तक Anarchy] State] and Utopia (1974) में न्यूनतम राज्यवाद (Minimal State) का समर्थन करते हुए जॉन रॉल्स के पुनर्वितरणवादी (Redistributive) न्याय सिद्धांत की आलोचना की। नोज़िक का तर्क था कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता सर्वोपरि है और संपत्ति का अधिकार मौलिक है। उनका हक–आधारित न्याय सिद्धांत (Entitlement Theory of Justice) स्वतंत्रता और व्यक्तिवाद के मूल्यों को बल देता है। इस शोध पत्र में नोज़िक के न्याय सिद्धांत का विस्तार से अध्ययन किया गया है और इसे व्यक्तिवाद तथा स्वतंत्रता के व्यापक परिप्रेक्ष्य में रखा गया है।

कीवर्ड– रॉबर्ट नोज़िक, न्याय सिद्धांत, व्यक्तिवाद, स्वतंत्रता, न्यूनतम राज्यवाद, संपत्ति अधिकार, हक आधारित न्याय

Introduction

राजनीतिक दर्शन में न्याय की अवधारणा लंबे समय से बहस का विषय रही है। जॉन रॉल्स ने अपनी पुस्तक । Theory of Justice (1971) में पुनर्वितरणवादी सिद्धांत प्रस्तुत किया, जिसका उद्देश्य सामाजिक समानता को बढ़ावा देना था। इसके विपरीत, रॉबर्ट नोज़िक ने एक प्रतिस्पर्धी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया, जिसमें व्यक्तिगत स्वतंत्रता और संपत्ति अधिकारों को प्राथमिकता दी गई। यह शोध पत्र नोज़िक के न्याय सिद्धांत का गहन विश्लेषण करेगा और इसे व्यक्तिवाद तथा स्वतंत्रता के व्यापक दर्शन के साथ जोड़ेगा। इस अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि नोज़िक का सिद्धांत आधुनिक उदारवादी समाज में किस प्रकार प्रासंगिक है।

रॉबर्ट नोज़िक का जन्म 1938 में हुआ था और वे हार्वर्ड विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर रहे। उनका प्रमुख कार्य Anarchy, State, and Utopia (1974) राजनीतिक दर्शन पर एक महत्वपूर्ण ग्रंथ माना जाता है। नोज़िक मुख्य रूप से एक उदारवादी (Libertarian) विचारक थे, जिन्होंने प्राकृतिक अधिकारों और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा पर बल दिया। उन्होंने न्यूनतम राज्यवाद का समर्थन किया और तर्क दिया कि कराधान जबरन श्रम (Forced Labor) के समान है।

नोज़िक का न्याय सिद्धांत–

1. **हक आधारित न्याय (Entitlement Theory of Justice)**– नोज़िक का न्याय सिद्धांत तीन प्रमुख सिद्धांतों पर आधारित है–

अर्जन का सिद्धांत (Principle of Acquisition)– यदि कोई व्यक्ति प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके संपत्ति अर्जित करता है, तो वह संपत्ति उसका वैध अधिकार बन जाती है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 08, August 2024

हस्तांतरण का सिद्धांत (Principle of Transfer) – यदि संपत्ति का हस्तांतरण स्वैच्छिक रूप से होता है, तो वह भी न्यायसंगत माना जाएगा।

सुधार का सिद्धांत (Principle of Rectification)– यदि संपत्ति किसी अन्यायपूर्ण तरीके से अर्जित की गई है, तो उसे न्यायसंगत बनाने के लिए सुधार की आवश्यकता होती है।

नोज़िक का यह दृष्टिकोण पुनर्वितरणवादी नीतियों का खंडन करता है, क्योंकि उनका मानना था कि राज्य को संपत्ति का पुनर्वितरण करने का कोई नैतिक अधिकार नहीं है।

2. न्यूनतम राज्यवाद (Minimal State Theory)– नोज़िक के अनुसार, सरकार का एकमात्र उद्देश्य नागरिकों की रक्षा करना और अनुबंधों को लागू करना होना चाहिए। उन्होंने अराजकता (Anarchy) और यूटोपिया (Utopia) की अवधारणा का विश्लेषण करते हुए कहा कि राज्य को केवल रक्षात्मक भूमिकाओं तक सीमित रहना चाहिए।

3. व्यक्तिवाद और स्वतंत्रता– नोज़िक का दृष्टिकोण व्यक्तिवाद और स्वतंत्रता के मूल्यों के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। उनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति स्वयं का स्वामी है और उसके जीवन के निर्णयों पर किसी अन्य व्यक्ति या संस्था का अधिकार नहीं होना चाहिए। स्वतंत्रता संपत्ति अधिकारों के साथ जुड़ी हुई है, क्योंकि संपत्ति का अधिकार व्यक्तिगत स्वायत्तता को सुरक्षित रखता है। किसी भी प्रकार का जबरदस्ती किया गया पुनर्वितरण व्यक्तिगत स्वतंत्रता का उल्लंघन करता है।

राबर्ट नोज़िक बनाम जान रॉल्स– न्याय की दो प्रतिस्पर्धी अवधारणाएँ– रॉल्स और नोज़िक के बीच न्याय की अवधारणा को लेकर गहरी असहमति थी। जहाँ रॉल्स ने Difference Principle के माध्यम से समाज में असमानताओं को कम करने की वकालत की, वहीं नोज़िक ने इसे व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिए हानिकारक माना। रॉल्स का सिद्धांत इस विचार पर आधारित था कि न्याय वह है, जो समाज के सबसे वंचित वर्गों की स्थिति को सुधारता है। उन्होंने Justice as Fairness की अवधारणा विकसित की, जिसमें दो प्रमुख सिद्धांत शामिल थे।

समान स्वतंत्रता का सिद्धांत (Principle of Equal Liberty), प्रत्येक व्यक्ति को अधिकतम स्वतंत्रता प्राप्त होनी चाहिए, जब तक कि वह स्वतंत्रता दूसरों की स्वतंत्रता का अतिक्रमण न करे।

असमानता को न्यायसंगत बनाने का सिद्धांत (Difference Principle), सामाजिक और आर्थिक असमानताएँ तभी न्यायसंगत हैं, जब वे समाज के सबसे वंचित वर्गों के लिए लाभकारी हों।

रॉल्स का विचार था कि यदि कोई व्यक्ति अज्ञानता के पर्दे (Veil of Ignorance) के पीछे हो, यानी उसे यह न पता हो कि वह समाज में कौन–सी स्थिति में होगा, तो वह ऐसे न्याय सिद्धांत का चुनाव करेगा जो सबसे कमजोर वर्गों को अधिकतम लाभ पहुँचाए।

इसके विपरीत, नोज़िक का दृष्टिकोण पूरी तरह से अलग था। उन्होंने तर्क दिया कि कोई भी न्यायसंगत प्रणाली केवल तब मान्य हो सकती है जब वह व्यक्तियों के स्वाभाविक अधिकारों का सम्मान करे। उनके Entitlement Theory of Justice के अनुसार स्वतंत्रता महत्वपूर्ण हैरू कोई भी राज्य जो लोगों की संपत्ति को पुनर्वितरित करता है, वह उनकी स्वतंत्रता का उल्लंघन करता है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 08, August 2024

संपत्ति अधिकार मौलिक हैं– यदि कोई व्यक्ति कानूनी और नैतिक रूप से संपत्ति अर्जित करता है, तो उसे उससे वंचित करना अन्याय होगा।

राज्य की भूमिका सीमित होनी चाहिए, राज्य का कार्य केवल अनुबंध लागू करना और सुरक्षा प्रदान करना होना चाहिए, न कि सामाजिक समानता स्थापित करना।

व्यावहारिक प्रभाव– रॉल्स का सिद्धांत कल्याणकारी राज्य (Welfare State) की अवधारणा को समर्थन देता है, जहाँ सरकार सामाजिक सुरक्षा, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं जैसी योजनाएँ लागू कर सकती है।

नोज़िक का सिद्धांत मुक्त बाजार पूंजीवाद (Free Market Capitalism) और न्यूनतम सरकार (Minimal Government) की वकालत करता है।

मुख्य अंतरों का तुलनात्मक विश्लेषण

विषय	जॉन रॉल्स	रॉबर्ट नोज़िक
न्याय की परिभाषा	न्याय का अर्थ निष्पक्षता (Fairness) है।	न्याय का अर्थ व्यक्तिगत हक (Entitlement) है।
राज्य की भूमिका	राज्य को पुनर्वितरण करना चाहिए ताकि सबसे कमजोर वर्गों को लाभ मिले।	राज्य को केवल न्यूनतम हस्तक्षेप करना चाहिए और लोगों की संपत्ति की रक्षा करनी चाहिए।
स्वतंत्रता बनाम समानता	समानता अधिक महत्वपूर्ण है, लेकिन स्वतंत्रता को भी महत्व दिया जाता है।	स्वतंत्रता सर्वोपरि है, समानता स्वाभाविक रूप से विकसित होती है।
संपत्ति और पुनर्वितरण	संपत्ति का पुनर्वितरण न्यायोचित हो सकता है यदि यह समाज के सबसे वंचित लोगों की स्थिति को सुधारता है।	पुनर्वितरण अन्यायपूर्ण है क्योंकि यह जबरन कराधान के माध्यम से अर्जित संपत्ति को छीनने जैसा है।
नैतिक आधार	सामाजिक अनुबंध और "अज्ञानता का पर्दा"।	प्राकृतिक अधिकार और "न्यायोचित अर्जन व हस्तांतरण"।

रॉल्स और नोज़िक दोनों ने न्याय की अवधारणा को अलग–अलग दृष्टिकोणों से प्रस्तुत किया। जहाँ रॉल्स का ध्यान समाज के सबसे वंचित वर्गों की भलाई पर था, वहीं नोज़िक व्यक्तिगत स्वतंत्रता और संपत्ति अधिकारों को सर्वोपरि मानते थे। यह बहस आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि विभिन्न देशों की नीतियाँ इन दोनों विचारधाराओं के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती हैं।

नोज़िक के न्याय सिद्धांत की आलोचना– हालाँकि नोज़िक का दृष्टिकोण व्यक्तिवाद और स्वतंत्रता को बल देता है, लेकिन इसकी कुछ सीमाएँ भी हैं–

हालाँकि रॉबर्ट नोज़िक का Entitlement Theory of Justice व्यक्तिगत स्वतंत्रता और संपत्ति अधिकारों की सुरक्षा पर आधारित है, लेकिन इस सिद्धांत की कई स्तरों पर आलोचना की गई है। कुछ प्रमुख आलोचनाएँ निम्नलिखित हैं।

1. सामाजिक असमानता को बढ़ावा– नोज़िक के न्याय सिद्धांत के अनुसार, यदि संपत्ति का अधिग्रहण और स्थानांतरण न्यायसंगत है, तो परिणामस्वरूप उत्पन्न असमानता भी न्यायसंगत होगी। आलोचकों का तर्क है

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 08, August 2024

कि यह दृष्टिकोण समाज में अत्यधिक असमानता को वैध ठहराता है और इससे अमीर और गरीब के बीच खाई और गहरी हो सकती है।

2. पुनर्वितरण का पूर्ण विरोध अनुचित– नोज़िक यह मानते हैं कि राज्य को पुनर्वितरण नीतियों से दूर रहना चाहिए, लेकिन कई दार्शनिक और अर्थशास्त्री इस विचार से असहमत हैं। उनका कहना है कि पूर्ण रूप से पुनर्वितरण का निषेध गरीब और वंचित वर्गों के लिए घातक हो सकता है, विशेष रूप से उन मामलों में जहाँ अवसरों की असमानता जन्मजात या सामाजिक कारणों से उत्पन्न होती है।

3. संपत्ति अधिग्रहण और न्यायसंगतता का प्रश्न– नोज़िक का तर्क है कि यदि कोई व्यक्ति किसी संपत्ति को न्यायसंगत तरीके से अर्जित करता है, तो वह उसकी वैध संपत्ति है। हालाँकि, यह सवाल उठता है कि ऐतिहासिक अन्याय, जैसे जबरन श्रम, उपनिवेशवाद, और भूमि हथियाने के संदर्भ में इस सिद्धांत को कैसे लागू किया जाए? क्या संपत्ति का प्रारंभिक अधिग्रहण हमेशा नैतिक और न्यायोचित होता है?

4. सार्वजनिक भलाई और सामाजिक जिम्मेदारी की उपेक्षा– नोज़िक का सिद्धांत व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर अत्यधिक बल देता है, लेकिन यह इस तथ्य की उपेक्षा करता है कि एक समाज में नागरिकों की कुछ सामाजिक ज़िम्मेदारियाँ भी होती हैं। कराधान के बिना बुनियादी सुविधाएँ, जैसे स्वास्थ्य, शिक्षा और बुनियादी ढाँचा, कैसे संचालित होंगे? यदि केवल न्यूनतम राज्य ही मौजूद होगा, तो सार्वजनिक सेवाओं का भविष्य क्या होगा?

5. न्याय केवल ऐतिहासिक प्रक्रिया पर आधारित नहीं हो सकता– नोज़िक का Entitlement Theory इस पर ज़ोर देता है कि यदि किसी संपत्ति का अर्जन और स्थानांतरण न्यायसंगत है, तो उसका स्वामित्व भी न्यायसंगत है। हालाँकि, कई दार्शनिकों का मानना है कि केवल ऐतिहासिक प्रक्रिया को देखना पर्याप्त नहीं है; हमें इस बात पर भी विचार करना चाहिए कि क्या संपत्ति का वितरण व्यापक सामाजिक न्याय को बढ़ावा देता है या नहीं।

6. न्यूनतम राज्यवाद की व्यवहारिक चुनौतियाँ– नोज़िक के न्यूनतम राज्य के विचार को लागू करना कठिन हो सकता है, क्योंकि यह मानवीय समाजों की जटिलता और पारस्परिक निर्भरता को अनदेखा करता है।

7. नोज़िक के स्वयं के संशोधन– नोज़िक ने अपने जीवन के बाद के वर्षों में स्वयं स्वीकार किया कि उनका सिद्धांत कुछ सीमाओं के साथ आया था। उन्होंने यह माना कि कुछ पुनर्वितरण योजनाएँ आवश्यक हो सकती हैं यदि वे अत्यधिक नैतिक रूप से आवश्यक हैं।

रॉबर्ट नोज़िक का न्याय सिद्धांत व्यक्तिगत स्वतंत्रता और संपत्ति अधिकारों को सर्वोपरि मानता है, लेकिन इसकी व्यावहारिक और नैतिक चुनौतियाँ बनी हुई हैं। यह स्पष्ट है कि किसी भी न्याय प्रणाली को पूरी तरह से व्यक्तिगत अधिकारों या सामाजिक समानता में से किसी एक पर निर्भर नहीं होना चाहिए, बल्कि एक संतुलन बनाना आवश्यक है।

आधुनिक संदर्भ में नोज़िक के विचार– रॉबर्ट नोज़िक के न्याय सिद्धांत को आधुनिक संदर्भ में समझने के लिए यह देखना आवश्यक है कि उनके विचार वर्तमान वैश्विक आर्थिक और राजनीतिक परिदृश्य में किस प्रकार लागू होते हैं। आज के समय में, उनके विचार निम्नलिखित क्षेत्रों में विशेष रूप से प्रासंगिक हैं–

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 08, August 2024

मुक्त बाजार और वैश्वीकरण – नोज़िक के मुक्त बाजार समर्थक दृष्टिकोण को वर्तमान वैश्विक अर्थव्यवस्था में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। विश्व के कई देशों ने आर्थिक उदारीकरण को अपनाया है, जहाँ सरकारें व्यापार और उद्योग पर कम नियंत्रण रखती हैं। यह नोज़िक के न्यूनतम राज्यवाद के सिद्धांत के अनुरूप है, जहाँ सरकार केवल अनुबंध प्रवर्तन और नागरिक सुरक्षा तक सीमित रहती है।

टेक्नोलॉजी और डिजिटल स्वतंत्रता– आज के डिजिटल युग में, व्यक्तिगत डेटा सुरक्षा और स्वतंत्रता अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गए हैं। नोज़िक का जोर व्यक्तियों के अधिकारों की सुरक्षा पर था, जो कि वर्तमान में डेटा गोपनीयता और ऑनलाइन अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के संदर्भ में अत्यधिक प्रासंगिक है। उनके विचार टेक कंपनियों के बढ़ते नियंत्रण और सरकारों द्वारा डिजिटल निगरानी की बढ़ती प्रवृत्ति के बीच संतुलन स्थापित करने में सहायक हो सकते हैं।

कराधान और संपत्ति अधिकार– नोज़िक ने जबरन कराधान को जबरन श्रम के समान माना था। वर्तमान समय में, कई पूंजीवादी देशों में कर नीति को लेकर बड़ी बहसें चल रही हैं। अमीर व्यक्तियों और बहुराष्ट्रीय कंपनियों पर उच्च कर लगाने की प्रवृत्ति नोज़िक के सिद्धांतों के विपरीत जाती है, जबकि कर में कटौती और आर्थिक स्वतंत्रता की नीति उनके विचारों के अनुरूप मानी जा सकती है।

कल्याणकारी राज्य बनाम न्यूनतम राज्य– आज भी यह बहस जारी है कि सरकार की भूमिका कितनी होनी चाहिए। स्कैंडिनेवियाई देशों की कल्याणकारी राज्य व्यवस्था और अमेरिका जैसे देशों में अपेक्षाकृत कम सरकारी हस्तक्षेप वाली प्रणाली में यह अंतर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। नोज़िक का न्यूनतम राज्य का मॉडल उन देशों के लिए एक आदर्श बन सकता है, जो सरकारी नियंत्रण को कम कर स्वतंत्र आर्थिक विकास को प्राथमिकता देना चाहते हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और स्वचालन– कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और स्वचालन के बढ़ते प्रभाव से रोजगार और आर्थिक असमानता को लेकर चिंताएँ उत्पन्न हो रही हैं। नोज़िक का न्याय सिद्धांत कहता है कि यदि संसाधनों का वितरण उचित तरीके से किया गया है, तो असमानता स्वीकार्य है। हालाँकि, इस संदर्भ में उनकी विचारधारा को नई परिस्थितियों के अनुसार समायोजित करने की आवश्यकता हो सकती है।

कोविड–19 और व्यक्तिगत स्वतंत्रता– महामारी के दौरान सरकारों द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता बनाम सार्वजनिक भलाई की बहस को जन्म दिया। नोज़िक के दृष्टिकोण से, लॉकडाउन और वैक्सीन जनादेश जैसी नीतियाँ व्यक्तिगत अधिकारों का हनन हो सकती हैं, जबकि उनके आलोचक कहते हैं कि सामूहिक सुरक्षा के लिए कुछ हद तक स्वतंत्रता का त्याग आवश्यक है।

राजनीतिक ध्रुवीकरण और स्वतंत्रता की अवधारणा– आज के समय में, दुनिया भर में राजनीतिक ध्रुवीकरण बढ़ रहा है, जहाँ एक ओर राज्य के नियंत्रण को मजबूत करने की प्रवृत्ति है और दूसरी ओर व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिए आंदोलन चल रहे हैं। नोज़िक के विचार उन समूहों को समर्थन दे सकते हैं जो सरकारी हस्तक्षेप के विरोधी हैं और स्वतंत्रता को सर्वोच्च मूल्य मानते हैं।

नोज़िक के विचार आज भी अत्यधिक प्रासंगिक हैं, विशेष रूप से आर्थिक उदारीकरण, डिजिटल स्वतंत्रता, कराधान, और राज्य की भूमिका से जुड़े विषयों में। हालाँकि, उनकी अवधारणाओं को आधुनिक सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के अनुरूप परखा जाना आवश्यक है। वर्तमान समय की जटिलताओं को

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 08, August 2024

देखते हुए, नोज़िक के सिद्धांत और उनके आलोचकों के विचारों के बीच संतुलन स्थापित करना आवश्यक होगा।

अंततोगत्वा रॉबर्ट नोज़िक का न्याय सिद्धांत व्यक्तिवाद और स्वतंत्रता के मूल्यों को संरक्षित करता है और न्यूनतम राज्यवाद की अवधारणा को समर्थन देता है। हालाँकि, इस सिद्धांत की आलोचनाएँ भी हैं, विशेष रूप से इसकी सामाजिक न्याय पर दी गई सीमित मान्यता को लेकर। आधुनिक संदर्भ में नोज़िक का दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है क्योंकि यह व्यक्तिगत स्वतंत्रता और संपत्ति अधिकारों पर गहन चर्चा को प्रेरित करता है। हालाँकि, समाज में आर्थिक असमानता को देखते हुए, कुछ पुनर्वितरणवादी नीतियों की आवश्यकता से इंकार नहीं किया जा सकता।

संदर्भ सूची–

नोज़िक, रॉबर्ट। एनार्की, स्टेट एंड यूटोपिया। बेसिक बुक्स, 1974।

रॉल्स, जॉन। अ थ्योरी ऑफ जस्टिस। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1971।

वोल्फ, जोनाथन। रॉबर्ट नोज़िकरू प्रॉपर्टी, जस्टिस एंड द मिनिमल स्टेट। स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1991।

किमलिका, विल। आधुनिक राजनीतिक दर्शनरू एक परिचय। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2002।

कोहेन, जी. ए। स्व–स्वामित्व, स्वतंत्रता और समानता। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1995।

वलेंटीने, पीटर (संपादक)। समानता और न्यायरू राजनीतिक दर्शन में न्याय। रूटलेज, 2003।

श्मिड्ट्ज़, डेविड। न्याय के तत्व। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2006।

टेलर, माइकल। समुदाय, अराजकता और स्वतंत्रता। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1982।

फ्रीमन, सैमुअल। रॉल्स। रूटलेज, 2007।

टोमासी, जॉन। मुक्त बाजार न्याय। प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 2012।